५८: मंडल परिवार सभा

दिनांक -१९-०२-२०१२

हर १० क्षेत्र सभाओं में से १-१ व्यक्ति का निर्वाचन होगा | हर क्षेत्र सभा में १०-१० सदस्य रहेंगे | इन १०-१० सदस्यों में से १-१ का निर्वाचन होगा | ऐसा १०-१० सदस्य एक मंडल परिवार सभा का गठन करेगा; जिनका समान अधिकार रहेगा | समान अधिकार का मतलब पांच आयामी व्यवस्था में से जब कभी भी कोई कार्य सामने आता है उसे हर व्यक्ति निपटारा कर सकता है | यह अधिकार मंडल सभा के हर सदस्य में समाहित रहेगा | साथ में सभी स्तरीय सभाओं का परीक्षण, निरीक्षण, सर्वेक्षण करने का अधिकार रहेगा | यह सकारात्मक पक्ष में ही रहेगा | सकारात्मक पक्ष का तात्पर्य, हर मंडल सभा क्षेत्र में हर परिवार समाधान सम्पन्न है कि नहीं, समृद्धि सम्पन्न है कि नहीं इसका परीक्षण कर सकते हैं | समाधान, समृद्धि में पारंगत होने के लिये सुझाव देने का अधिकार बना रहेगा | इस प्रकार मंडल परिवार सभा का महिमा समान होना समझ में आता है | क्षेत्र सभा से ग्राम सभा तक परीक्षण, निरीक्षण, सर्वेक्षण करने का अधिकार रहेगा | कमियों का आपूर्ति के लिये सुझाव, प्रस्ताव, प्रशिक्षण विधि का तत्परता से सम्पन्न करने का अधिकार रहेगा |

हर परिवार सभा का परीक्षण, निरीक्षण में मुख्य बात समाधान, समृद्धि, अभय सम्बंधी प्रमाण परम्परा के अर्थ में रहेगा | इस क्रम में न्याय-सुरक्षा सुलभता, शिक्षा-संस्कार सुलभता, उत्पादन-कार्य सुलभता, विनिमय-कोष सुलभता, और स्वास्थ्य-संयम सुलभता बना रहेगा; जो अखण्ड समाज का सूत्र है | मतलब अखण्ड समाज संस्कृति, सभ्यता का सूत्र रूप में रहेगा | यह क्रमशः परिवार सभा से विश्व परिवार सभा तक हर मानव में आचरित रहेगा | इस प्रकार से परिवार सभा का दायित्व धीरे धीरे फैलता हुआ दिखता है | यह विश्व परिवार सभा तक फैला हुआ रहेगा | यही मुख्य रूप में सार्वभौमता को प्रमाणित करने का सूत्र है | तकनीकी शिक्षा उत्पादन कार्य के लिये स्वीकृत रहेगा | चेतना विकास मूल्य शिक्षा मानव संस्कृति, सभ्यता पक्ष में सार्वजनिक अधिकार के रूप में रहेगा | सार्वजनिक अधिकार का मतलब समस्त नर-नारी से है अथवा समान अधिकार से मतलब है | इस क्रम में मानव ही शनैः शनैः सर्वशुभ के अर्थ में कार्य करने का मानसिकता सुदृढ़ होने का आवश्यकता है जो मानव को चिर वांछित है | जो सर्वशुभ होने पर सार्थक होता है |

इस क्रम में व्यवहारिक रूप में, से अनुभव प्रमाण तक प्रमाणित होने का अवसर हर व्यक्ति के लिये बना रहता है | हर व्यक्ति का मतलब हर नर-नारी से है | सर्वशुभ की सार्थकता होना मंडल सभा तक प्रमाणित हो जाता है | यही सर्वशुभ का अर्थ है | सर्वशुभ कार्यक्रम में ही अनुभवमूलक, विचारमूलक, व्यवहारमूलक विधि से प्रमाणित होना सहज है | अनुभवमूलक प्रमाण के रूप में समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व अनुभव सहज प्रमाण, प्रमाणित होना ही सार्वभौमता है | अनुभव प्रमाण सम्मत विचार प्रमाण नियम, नियंत्रण, संतुलन, न्याय, धर्म, सत्य के रूप में प्रमाणित होना सहज है | प्रमाणित करने का सूत्र शिक्षा विधि से ज्ञात होता है | कार्य व्यवहार विधि से प्रमाणित होता है | इस क्रम में सार्वभौमता निकटवर्ती दिखती है |

यही मंडल परिवार सभा का सार्थक रूप है | यह क्रियान्वयन होना मानव मानसिकता पर निर्भर है | अभी तक मानव अर्थात जंगल युग से आधुनिक, अत्याधुनिक युग तक व्यक्तिवाद, समुदायवाद ही प्रचलित हुआ है | इसी में शुभ होने का कल्पना करते हैं | चाहने के रूप में शुभ बना ही है हर व्यक्ति में | इसे सार्थक बनाना ही परिवारमूलक स्वराज्य व्यवस्था का आशय है | सर्वशुभ हो! जय हो! मंगल हो! कल्याण हो!

ए. नागराज ,

मध्यस्थ दर्शन, सहअस्तित्ववाद , भजनाश्रम, अमरकंटक , जिला-अनूपपुर (म. प्र.) ,